ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट

अंक : 22 सहयोग शुल्क : रु.1 **अक्टूबर : 2018**

दिव्यांग सेतु

संपादक : **- संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई**

खेलोगे तो खिलोगे'
मेहनत करके आगे बढ़ो और जिंदगी में आने वाली परेशानियों से कभी ना घबराओ।
- नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

जीवन में हमेशा कोशिश करते रहे, रस्सियाँ तो बहोत आयेंगी-जाएँगी। बस, उसे तोड़कर जीवन सार्थक करना हमारा कर्तव्य है।
- संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

निरामय हेल्थ पॉलिसी

पात्रता

- केन्द्र सरकार द्वारा चलाई जा रही यह पॉलिसी सेरेब्रल, पाल्सी, ऑटिज्म, मेन्टल रिटार्डेशन, मल्टिपल डिसेबिलिटीसे असरग्रस्त दिव्यांगो को मिल सकती है।
- ४०% अथवा उससे अधिक दिव्यांगता से असरग्रस्त व्यक्ति को इस पॉलिसी का लाभ मिल सकेगा।
- रू. २५०/- बी.पी.एल. एवं रु.५००/- ए.पी.एल. दिव्यांगो के लिए सिंगल प्रीमियम

लाभ

रु. १,००,०००/- तक का इंश्योरेंस मिल सकता है।
(निर्धारित किए हुए फंड के अनुसार)

यह प्रीमियम ॐकार फाउन्डेशन द्वारा भरा जाएगा

आवेदन-पत्र के साथ जमा किए जाने वाले प्रमाण-पत्र/दस्तावेज

सिविल सर्जन का दिव्यांगता दर्शाता प्रमाण-पत्र

(ऊपर बताई गई चार बीमारियों में से किसी भी एक का उल्लेख प्रमाण-पत्र में जरुरी है)

- वर्तमान की पासपोर्ट साइज़ फोटो
- राशनकार्ड की प्रमाणित कोपी
- निवास स्थान का प्रमाण (राशनकार्ड अथवा वोटिंग कार्ड)
- बी.पी.एल. कार्ड (यदि बी.पी.एल. में आते हैं तो)
- बैंक पासबुक की फोटो कोपी (बैंक ISFC कोड के साथ)

संपादकीय

दुआ करो कि ये पौधा सदा हरा ही लगे
उदासियों से भी चेहरा खिला-खिला ही लगे
~ बशीर बद्र

एक बार एक व्यक्ति, एक हाथी को रस्सी से बांध कर ले जा रहा था । एक दूसरा व्यक्ति इसे देख रहा था । उसे बड़ा आश्चर्य हुआ की इतना बड़ा जानवर इस हलकी सी रस्सी से बंधा जा रहा है। दूसरे व्यक्ति ने हाथी के मालिक से पूछा "यह कैसे संभव है की इतना बड़ा जानवर एक हलकी सी रस्सी को नहीं तोड़ पा रहा और तुम्हरे पीछे पीछे चल रहा है?"

हाथी के मालिक ने बताया जब ये हाथी छोटे होते हैं तो इन्हें रस्सी से बांध दिया जाता है उस समय यह कोशिश करते है रस्सी तोड़ने की पर उसे तोड़ नहीं पाते । बार बार कोशिश करने पर भी यह उस रस्सी को नहीं तोड़ पाते तो हाथी सोच लेते है की वह इस रस्सी को नही तोड़ सकते और बड़े होने पर कोशिश करना ही छोड़ देते है।

जीवन में हमेशा कोशिश करते रहे, रस्सियाँ तो बहोत आयेंगी-जाएँगी। बस, उसे तोड़कर जीवन सार्थक करना ही हमारा कर्तव्य होता है।

आप सबको दीपावली की ढेरों शुभकामनाएं।

दिव्यांग सेतु

मासिक पत्रिका

अक्टूबर : 2018, पृष्ठ संख्या : 16
वर्ष : 02 अंक : 10

प्रेरणास्त्रोत और संपादक

संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

सह-संपादक

मिहिरभाई शाह

मो. 97241 81999

संपर्क-सूत्र

सेवा समर्पण फाउन्डेशन

ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट (NGO)

Trust Reg. No. : E/20646/Ahmedabad

००१, ग्राउण्ड फ्लोर, आंगी एपार्टमेन्ट,

अन्नपूर्णा पार्टी प्लाट के सामने,

नया विकासगृह रोड, पालडी,

अहमदाबाद - ३८०००९

मो. 99749 55365, 9974955125

मुद्रक

प्रिन्ट विज़न प्रा. लि.

आंबावाडी बजार, अहमदाबाद-6

079 26405200

वॉइस फॉर
दिव्यांग

दिव्यांगों को स्वाभिमान के साथ जीना सीखा रहे दिव्यांग जाहिद-खुर्शीद

रांची में दिव्यांग को देखा था भीख मांगते, कमजोरी को ताकत बनाने की थी जिद

जाहिद अंसारी (30 वर्ष) और खुर्शीद आलम (42 वर्ष)। ये दोनों दिव्यांग हैं, लेकिन इनका हौसला दिव्यांगता पर भारी है। आज की भागदौड़ की जिंदगी में किसी के पास वक्त नहीं है, लेकिन दिव्यांगों की मदद को हमेशा तत्पर रहते हैं जाहिद। खुर्शीद ने रांची में दिव्यांग को भीख मांगते देखा था, तभी से कमजोरी को ताकत बनाने की जिद थी। जाहिद ने इनका साथ दिया और आज ये स्वाभिमान के साथ दिव्यांगों को जीना सीखा रहे हैं।

उत्साह बढ़ाने की कोशिश : खुर्शीद आलम

खुर्शीद आलम कहते हैं कि खुद के पैसे से 5 फरवरी को हर वर्ष वार्षिकोत्सव का आयोजन कर दिव्यांगों को जागरूक करने का प्रयास किया जाता है। इस दौरान सम्मानित कर उनका उत्साह बढ़ाने की कोशिश की जाती है। सरकार मदद करती, तो बेहतर कार्य कर पाते।

दिव्यांगों को चाहिए हुनर से रोजगार : जाहिद अंसारी

जाहिद अंसारी कहते हैं कि दिव्यांगों को हुनरमंद बनाकर रोजगार देने की जरूरत है। हवाई घोषणाएं कर दी जाती हैं, लेकिन उसका लाभ इन्हें नहीं मिल पाता है। व्यवसाय के लिए लोन भी नहीं मिल पा रहा है। हुनर के बाद भी रोजगार नहीं मिल रहा। रोजी-रोटी के लिए आर्थिक मजबूती जरूरी है।

वॉइस फॉर
दिव्यांग

दिव्यांग ही समझ सकता है दिव्यांगों का दर्द

स्नातक पास खुर्शीद पिठोरिया के सेमरटोली के रहने वाले हैं। पांचवीं तक पढ़े जाहिद पिठोरिया के नावाडीह के हैं। वह कहते हैं कि दिव्यांगता का दर्द उन्होंने झेला है। खासकर ग्रामीण इलाकों में तो उन्हें बोझ ही समझा जाता है। जाहिद कहते हैं कि बचपन के दिनों में जब कोई उन्हें लंगड़ा कहता था, तो बर्दाश्त नहीं कर पाते थे। लोग देखकर हंसेंगे, इस कारण वह घर से बाहर नहीं निकलते थे। खुर्शीद कहते हैं कि दिव्यांग को कोई आदमी नहीं समझता। आम आदमी की क्या कहें, जब पढ़े-लिखे अधिकारियों ने एक कुएँ के लिए उन्हें रुला दिया था। आखिरकार उन्होंने दिव्यांगों की ताकत बनने का फैसला किया।

विकलांग राहत सेवा संघ से कर रहे मदद

वर्ष 2003 में विकलांग राहत सेवा संघ का गठन किया गया, ताकि दिव्यांगों की मदद की जा सके। किसान परिवार से होने के कारण आर्थिक तंगी थी। इसके बावजूद हौसले की बदौलत मदद का सिलसिला जारी है। खुर्शीद अब बतौर पारा शिक्षक कार्य कर रहे हैं, जबकि जाहिद अब भी सेवा में समर्पित हैं।

दिव्यांगों के दर्द पर लगाया मरहम

एक हजार दिव्यांगों को स्वामी विवेकानंद नि:शक्तता पेंशन, 100 को सामाजिक सुरक्षा पेंशन, पांच सौ को कृत्रिम अंग, ढाई सौ को इंदिरा आवास एवं आठ को गौपालन के तहत गाय दिलाया गया। ढाई सौ को ट्राई साइकिल व बैसाखी, 10 को ब्लाइंड स्टिक, 50 को श्रवण यंत्र दिलवाया। एक हजार दिव्यांगों को प्रमाण पत्र बनवाने में मदद की। आज भी जाहिद एक फोन पर मदद को हाजिर रहते हैं। इन्हें अक्सर सदर अस्पताल कार्यालय में दिव्यांगों की आवाज बनते देखा जा सकता है।

मिसाल: भीख मांग कर दिव्यांग दंपति ने बनवाया शौचालय

गढ़पुरा (बेगूसराय) : प्रखंड क्षेत्र के रजौर पंचायत अंतर्गत सकरा निवासी दिव्यांग दंपति रामविलास साह व उनकी पत्नी ने भीख मांग कर लाये रुपयों को जमा कर शौचालय निर्माण कर लोगों के बीच एक मिसाल कायम की है। रामविलास साह दोनों आंखों और उनकी पत्नी दोनों पैरों से दिव्यांग हैं। दिव्यांग दंपति ने शौचालय बनवाने की ठान ली। रामविलास साह समस्तीपुर-खगड़िया रेलखंड के अलावा अन्य रेलखंडों पर चलने वाली ट्रेनों में डफली बजा कर और गाकर लोगों से भीख मांगते हैं, जिससे उनके परिवार में तीन बच्चों एवं दोनों पति-पत्नी का जीवन यापन होता है।

इन्हीं में से कुछ रुपये एकत्रित कर दोनों पति-पत्नी ने स्वयं मेहनत कर शौचालय निर्माण कार्य शुरू किया है। रामविलास साह ने बताया कि सरकार के द्वारा अंत्योदय कार्ड के माध्यम से डीलरों के यहां से राशन व केरोसिन मिलता है। डीलर के यहां से राशन का उठाव कर परिवार के भोजन-पानी का इंतजाम करते हैं। अगस्त माह में डीलर के यहां अनाज उठाव के लिए गये, तो डीलर ने कहा कि जब तक शौचालय निर्माण नहीं होगा, तब तक अनाज नहीं दिया जायेगा।

प्रेरित होकर कई लोग जुटे शौचालय निर्माण में

रजौर पंचायत के दिव्यांग दंपति के शौचालय निर्माण में जुटने के बाद आसपास के लोग भी शौचालय बनवाने के लिए प्रेरित हो रहे हैं। वार्ड सात के महादलित मुहल्ले निवासी मंटून पासवान की पत्नी इंदु देवी भी प्रेरित होकर डेढ़ धूर जमीन में ही रहने खाने-पीने एवं शौचालय बनाने का प्रण ठान लिया और उसी जमीन पर दो गड्ढे खुदवाकर शौचालय निर्माण करना प्रारंभ किया।

वॉइस फॉर
दिव्यांग

दिव्यांग वीरों का हौसला बढ़ा रही सेना

वर्ष 2018 को सेना दिव्यांग सैनिक के वर्ष के रूप में मना रही है। ऐसे में देश में कार्यक्रमों का आयोजन कर उन पूर्व सैनिकों के योगदान की सराहना की जा रही है, जिनके शरीरों पर युद्ध व सैन्य अभियान के दौरान मिले घाव उनकी वीरता के प्रतीक हैं।

वर्ष 2018 : दिव्यांग सैनिक वर्ष

राज्य ब्यूरो, जम्मू : सेना की चिनार कोर ने रविवार को बादामी बाग छावनी में पूर्व सैनिक रैली का आयोजन कर युद्धों और सैन्य अभियान में घायल हुए अपने पूर्व सैनिकों व वीर नारियों का हौसला बढ़ाया।

वर्ष 2018 को सेना दिव्यांग सैनिक के वर्ष के रूप में मना रही है। ऐसे में देश में कार्यक्रमों का आयोजन कर उन पूर्व सैनिकों के योगदान की सराहना की जा रही है, जिनके शरीरों पर युद्ध व सैन्य अभियान के दौरान मिले घाव उनकी वीरता के प्रतीक हैं। उत्तर भारत के छह राज्यों में ऐसे 12000 सैनिक हैं। सेना अपने फारेवर इन टच कार्यक्रम के जरिये इन पूर्व सैनिकों के संपर्क में है।

इस अभियान के तहत श्रीनगर में आयोजित कार्यक्रम में कोर के जीओसी लेफ्टिनेंट जनरल एके भट्ट ने बादामी बाग में आयोजित कार्यक्रम में उन वीरों का हौसला बढ़ाया, जो ड्यूटी के दौरान घायल होने के बाद आज चुनौतियों का डटकर मुकाबला कर रहे हैं। उन्होंने पूर्व सैनिकों और वीर नारियों के लिए चलाए जा रहे कार्यक्रमों के बारे में जानकारी दी। एके भट्ट ने बताया कि सेना की ओर से अपने वीरों के लिए कई प्रकार की गतिविधियों का आयोजन किया जा रहा है। इस दौरान जीओसी ने पूर्व सैनिकों, उनके परिजनों और वीर नारियों को उनके कल्याण के लिए चलाई जा रही योजनाओं के बारे में जागरूक बनाने के लिए कक्ष का भी उद्घाटन किया।

पूर्व सैनिक रैली में पूर्व सैनिकों के लिए मेडिकल चेकअप, केंद्र व राज्य सरकार की योजनाओं के स्टाल भी लगाए गए थे। इन स्टालों पर योजनाओं के बारे में जानकारी दी गई। इस मौके पर सेना के ब्रांड अंबेसडर सम्मानित किए गए।

घायल सैनिकों के मसले सुनने के साथ ही कोर कमांडर ने दिव्यांग सैनिकों को सुनने और चलने के लिए कई उपकरण भेंट किए। इस मौके पर सेना के कई वरिष्ठ अधिकारी मौजूद थे।

दिव्यांग बच्चों से मिल भावुक हुए सलमान खान, निकल पड़े आंसू

सलमान खान अक्सर अपनी फिल्मों और कैरेक्टर के कारण चर्चा में रहते हैं। लेकिन इस बार दबंग खान के चर्चा में आने की वजह है एक वीडियो। सोशल मीडिया पर सलमान खान का एक वीडियो को बार-बार देखा जा रहा है जिसमें वे काफी इमोशनल नजर आ रहे हैं। दरअसल हाल ही में दबंग खान दिव्यांग बच्चों से मिलने के लिए पहुंचे थे। मुलाकात के दौरान वे इतना भावुक हो जाते हैं कि उनकी आंखों से आंसू से

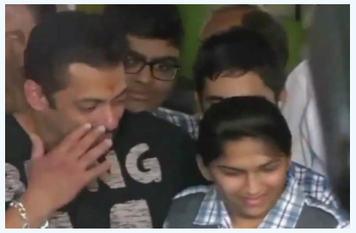

निकल पड़ते हैं। वीडियो को विरल भियानी नाम के एक इंस्टा हैंडल ने शेयर किया है। वीडियो में देख सकते हैं कि ब्लैक कलर की टी-शर्ट में नजर आ रहे सलमान खान बच्चों से घिरे हुए नजर आ रहे हैं। सलमान बच्चों से बात करते हुए भी दिखाई पड़ रहे हैं। इसी दौरान सलमान खान थोड़ा भावुक हो जाते हैं और उनकी आंखें नम हो जाती हैं। दबंग खान को अपने आंसू पोंछते हुए भी देखा जा सकता है। सलमान के इस वीडियो को देखने के बाद फैन्स ने कमेंट्स की बौछार लगा दी है।

वॉइस फॉर
दिव्यांग

हाईकोर्ट का आदेश: दिव्यांग उम्मीदवार को MBBS पाठ्यक्रम में दाखिला दे तमिलनाडु सरकार

मद्रास उच्च न्यायालय ने एकल पीठ के आदेश को दरकिनार करते हुए तमिलनाडु सरकार को निर्देश दिया है कि वह एक दिव्यांग एमबीबीएस उम्मीदवार को पाठ्यक्रम में शामिल करे और उसे एनईईटी परीक्षा में शामिल होने पर जोर नहीं दे।

न्यायमूर्ति एच.जी. रमेश और न्यायमूर्ति के. कल्याणसुंदरम की खंडपीठ ने 2016 में एकल पीठ के आदेश को दरकिनार कर यह निर्देश दिया। एकल पीठ ने एक विशेषज्ञ समिति की रिपोर्ट पर विचार करते हुए अपीलकर्ता की अपील खारिज कर दी थी।

समिति ने अपनी रिपोर्ट में कहा था कि 80 फीसदी दिव्यांगता के कारण वह पात्र नहीं है।

अदालत ने कहा, ''हमारी राय है कि 2016-17 के दौरान एमबीबीएस के लिए आवेदन करने वाले उम्मीदवार दाखिला पाने के लिए पात्र और हकदार है। लेकिन उसके मामले पर ठीक से विचार नहीं किए जाने के कारण वह पहले ही दो साल गंवा चुकी है।'

पीठ ने कहा कि 2016-17 के दौरान मेडिकल में दाखिले के लिए एनईईटी परीक्षा पास करना अनिवार्य नहीं था। यदि अब इस आधार पर याचिकाकर्ता के. नंदिनी का केस खारिज किया गया तो उसके लिए एनईईटी परीक्षा देना मुश्किल होगा।

सुप्रीम कोर्ट का सरकार को आदेश- कुष्ठ रोगियों को दिए जाएं दिव्यांगता प्रमाणपत्र

सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को केंद्र को निर्देश दिया कि कुष्ठ रोगियों को दिव्यांगता प्रमाणपत्र जारी करने पर विचार किया जाए ताकि वे आरक्षण और दूसरी कल्याणकारी योजनाओं का लाभ प्राप्त कर सकें। मामले में मुख्य न्यायाधीश दीपक मिश्रा की पीठ ने कुष्ठ रोग के उन्मूलन और रोगियों के पुनर्वास के बारे में भी केंद्र और सभी राज्य सरकारों को निर्देश दिए हैं।

पीठ ने कहा कि निजी और सरकारी अस्पतालों के मेडिकल स्टाफ को संवेदनशील बनाया जाए, जिससे कुष्ठ रोगियों को किसी प्रकार के भेदभाव का सामना नहीं करना पड़े। कुष्ठरोगी अलग-थलग नहीं हों और सामान्य वैवाहिक जीवन गुजार सकें, इसलिए शीर्ष अदालत ने सरकार को कुष्ठ रोग के बारे में जागरूकता अभियान शुरू करने का भी निर्देश दिया।

वॉइस टू
दिव्यांग

दिव्यांग सहाय की ओर एक कदम

संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई के सान्निध्य में दिव्यांगजनों को ट्रायसिकल एवं व्हील चेयर की भेट दी गई - इस अवसर की कुछ झलकियाँ

मोहम्मद शमी ने किया ऐसा काम, अब हर कोई कर रहा तारीफ

टीम इंडिया के तेज गेंदबाज मोहम्मद शमी ने पिछले कुछ महीनों में काफी उतार-चढ़ाव का सामना किया है। वह निजी जिंदगी में तनाव से जूझते दिखे। इसका असर मैदान पर भी शमी के प्रदर्शन में दिखा। इतने लंबे समय से नकारात्मक्ताएं झेल रहे तेज गेंदबाज ने विश्वास नहीं खोया। शमी ने लंबे ब्रेक के बाद कड़ी मेहनत की और अब टीम इंडिया का प्रतिनिधित्व करने के लिए तैयार हैं। टीम इंडिया की तरफ से इंग्लैंड के खिलाफ टेस्ट सीरीज खेलने से पहले शमी ने अपने गांव में दया-भाव का काम किया। हाल ही में शमी ने अपने गांव उत्तर प्रदेश के अमरोहा में शमी ने दिव्यांगों को ट्राईसिकल भेंट की।

स्कूल पहुंचे पीएम मोदी से जब इस दिव्यांग बच्चे ने कर डाली ये डिमांड तो देखिये क्या कहा पीएम मोदी ने

नई दिल्ली। पीएम नरेंद्र मोदी ने सोमवार को अपना 68वां जन्मदिन संसदीय क्षेत्र वाराणसी में मनाया। यहां उन्होंने काशी विधापीठ ब्लॉक स्थित नरउर प्राइमरी स्कूल में बच्चों से बातचीत की। उन्होंने बच्चों के साथ काफी वक्त बिताया। बच्चों से की मुलाकात में पीएम मोदी ने कहा कि वे निडर बनें और सवाल पूछने में कभी ना घबराएं। डर दूर करने के लिए उन्होंने राष्ट्रपति महात्मा गांधी का उदाहरण देते हुए बताया कि गांधी जी जब छोटे थे तो वे डरते थे, तब उनकी मां ने बताया कि तुम राम का नाम लो।

इसी दौरान मोदी ने 5वीं क्लास के एक दिव्यांग बच्चे दीपक से पूछा- मुझसे मिलकर कैसा लग रहा है? इस पर बच्चे ने जवाब दिया- सबसे पहले आपको जन्मदिन की हार्दिक बधाई। काका आप हमारे स्कूल में हैं, हमें बहुत अच्छा लगा। इसके बाद बच्चे ने मोदी से साइकिल की डिमांड कर दी। जिस पर पीएम ने भी फौरन हामी भरते हुए कहा- 'तुम चिंता मत करो, तुम्हें साइकिल जरूर मिलेगी।' मोदी ने बच्चों से विभिन्न विषयों पर बात की और उन्हें खेल की आवश्यकता के बारे में भी बताया। उन्होंने बच्चों से कहा कि खेल भी बहुत जरूरी है। अपने बीच प्रधानमंत्री को पाकर खुश नजर आ रहे बच्चों ने कहा कि मोदी 'काका' ने उनसे कहा है कि 'खेलोगे तो खिलोगे'। प्रधानमंत्री ने उन्हें मेहनत करके आगे बढ़ने की नसीहत दी और कहा कि जिंदगी में आने वाली परेशानियों से कभी ना घबराएं।

"प्रेरणादायी जीवनचरित्र"

Where there is a will there is a way

जिमिष भास्करभाई पारेख

Vibrant GUJARAT
The Global Business Hub
सत्यमेव जयते
ગુજરાત સરકાર
શ્રમ અને રોજગાર વિભાગ
પ્રશસ્તિ પત્ર
વર્ષ : ૨૦૧૦
શ્રી પારેખ જીમીષ ભાસ્કરરાય ને
મંદબુદ્ધિ હોવા છતાં પ્રશંસનીય
કાર્યકુશળતા દાખવવા માટે
રાજ્ય સરકાર તરફથી આ પ્રશસ્તિ પત્ર
એનાયત કરવામાં આવે છે.
ગાંધીનગર
અધિક મુખ્ય સચિવ

भारत सरकार
GOVERNMENT OF INDIA
सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय
MINISTRY OF SOCIAL JUSTICE AND EMPOWERMENT
DEPARTMENT OF DISABILITY AFFAIRS
विकलांगजन सशक्तिकरण हेतु राष्ट्रीय पुरस्कार - 2012
NATIONAL AWARD FOR THE EMPOWERMENT OF PERSONS WITH DISABILITIES - 2012
यह राष्ट्रीय पुरस्कार
श्री जिमिश भास्करराय पारिख
को अति कुशल कर्मचारी / स्व-नियोजित व्यक्ति के रूप में उनके उत्कृष्ट कार्य के लिए सम्मानित करने हेतु प्रदान किया जाता है।
THIS NATIONAL AWARD IS GIVEN TO
Shri Jimish Bhaskarrai Parekh
IN PUBLIC RECOGNITION OF HIS/HER OUTSTANDING PERFORMANCE AS THE MOST EFFICIENT EMPLOYEE / SELF-EMPLOYED PERSON
नई दिल्ली New Delhi
दिनांक Dated 06-02-2013
सचिव भारत सरकार
Secretary to the Government of India

अंग्रेजी में एक कहावत है "Where there is a will there is a way" इस कहावत को सही मायने में किसी ने जीवन में उतारी हो और असामान्य परिणाम पाया हो तो वो है जिमिष भास्करभाई पारेख ।

अत्यंत साधारण परिवार में जन्मे हुए निमिष के माता-पिता को जन्म के थोड़े समय बाद जानने को मिला कि जिमिष मनोदिव्यांग था। परंतु पिता भास्करभाई का आत्मविश्वास और माता हंसाबहन की श्रध्धा पुत्र को अपने पैरों पर खड़े होने वाली पारसमणि साबित हुई।

मनोदिव्यांग बालक को अपना नसीब मानकर हिंमत हारकर बैठे न रहते माता- पिता ने अपने अथाक प्रयत्न, परिश्रम और महेनत से जिमिष में समज, कुशलता और जीवन को सहजता से जीने की हर एक काबिलियत का सिंचन किया। माता-पिता ने जिमिष को बचपन से ही स्पेशियल ट्रेनिंग दी और कक्षा ९ तक मोरबी में अभ्यास भी करवाया उस दौरान उनको बहुत सारी मुश्केलियों का सामना भी करना पड़ा। परंतु इसी ट्रेनिंग और अभ्यास की वजह से जन्म से मनोदिव्यांग जिमिष आज पिछले १४ सालों से अलग-अलग जगहों पर प्राइवेट संस्था में नौकरी कर रहा है। पिछले ९ सालों से एक ही कंस्ट्रक्शन कंपनी पटेल एजन्सी में ऑफिस आसिस्टंट की पोस्ट पर काम कर रहा है। और रु. ६००० मासिक सेलरी भी पा रहा है। साथ- साथ जिमिष अपनी दैनिक प्रक्रिया के तमाम कार्य खुद ही करता है। सायकल चलाता है। पिछले १२ साल से स्कूटर भी चलाता है और ऑफिस-घर के काम स्वतंत्र खुद ही करता है। बेंकिंग, पोस्ट ऑफिस, इलेक्ट्रीसिटी बिल, वेराबिल, मोबाईल बिल खुद ही उस स्थान पर वाहन चला कर भरने जाता है, और सर्विस में से समय निकाल कर दिव्यांग बच्चों के लिए काम करती राजकोट की ख्यातनाम "प्रवास" संस्था में तालीम देने भी जाता है। इतना ही नहीं परंतु कोई नोर्मल व्यक्ति भी शायद ना हांसिल कर सके ऐसी अनेक सिध्धियाँ जिमिष ने हांसिल की है। जैसे कि २०१२-१३ में दिल्ही में राष्ट्रपति एवार्ड श्री प्रणव मुखर्जी के हस्तक मिला है। यह एवार्ड उसे बेस्ट एम्प्लोयर के लिए मिला है। इसके साथ २०१२ में मुख्यमंत्री एवार्ड भी जिमिष को मिला है। २०१५-१६ में भी जिमिष का सिलेक्शन मुख्यमंत्री एवार्ड के लिए हो गया है। मुख्यमंत्री एवार्ड के लिए सतत तीसरी बार सिलेक्ट हुआ निमिष राज्य का एक मात्र मनोदिव्यांग है। जो कि केवल उसके माता-पिता के लिए ही नहीं, परंतु संपूर्ण राज्य के लिए गर्व की बात है। इसके अलावा भी निमिष ने स्पोर्ट्स फिल्ड में भी अच्छा दिखाव किया है। स्पेशयल ओलम्पिक में जिमिष ने २०१० में सायकलिंग में २ किमी और ५ किमी में प्रथम स्थान पाया है खेलमहाकुम्भ रमत-गमत युवा सांस्कृतिक प्रवृति गांधीनगर में भी सायकलिंग में २०११ में प्रथम स्थान प्राप्त किया और २००६ में स्पेशयल ओलम्पिक में स्केटिंग में द्वितीय और २००८ में लोंग जम्प में तृतीय स्थान प्राप्त किया है।

इसके अलावा जिमिष विधानसभा चुनाव में दिव्यांगो के लिए स्टेट आइकन के लिए भी जाहिर किया गया था जिसके अंतर्गत जिमिष ने अलग-अलग जगहों पर खास कार्यकम देकर दिव्यांगो के मत अधिकार कि जानकारी दी थी।

कोई नोर्मल व्यक्ति के लिए भी इतनी सिध्धियाँ पाना आसान नहीं होता तब एक मनोदिव्यांग जिमिष ने उसके पेरेन्ट्स के सपोर्ट और खुद के मनोबल कि मदद से अपनी दिव्यांगता को भी मात दे दी है। जिमिष अब अपनी जिन्दगी स्वतंत्र नोर्मल दुसरे व्यक्तिओं कि जैसे ही जीता है और आनंद करता है। समाज के लिए जिमिष ने और उसके माता-पिता ने एक अच्छा द्रष्टांत कायम किया है। हाल ही में जिमिष के पेरेन्ट्स राजकोट में ऐसे दिव्यांग बच्चों के विकास और उससे जुड़े संकडो प्रश्नों से संबंधित अलग अलग रूप में जागृतता लाने के लिए माहिती और मार्गदर्शन देकर उनकी अनेक मुश्केलियों का निराकरण करने में सहायक बनते है। जिमिष के पिता भास्करभाई दिव्यांग बच्चों की "प्रवास- पेरेन्ट्स असोसिएशन फॉर स्पेशिअल चाइल्ड" नामक एक संस्था जिसमे करीबन १५० दिव्यांग बच्चों को ट्रेनिंग दी जाती है उसमें भी सेक्रेटरी के तौर पर फर्ज निभा रहे है और दिव्यांगो के जीवन को और उनके परिवार को सुखमय बनाने में मददगार होते है। जिमिष की यह असामान्य सिध्धियाँ और उसके पेरेन्ट्स का यह पुरुषार्थ समग्र दिव्यांगो के लिए और उनके माता-पिता के लिए एक प्रेरणा का स्त्रोत बन गया है।

किसान के दिव्यांग बेटे ने पाई देश में आठवीं रैंक

अगर मन में कुछ पाने की ठान लो तो कई बार कमजोरी ही ताकत बन जाती है। नवाबगंज के एक छोटे से गांव सुंदरी के रहने वाले मुनेंद्र पाल ने एक पैर से दिव्यांग होने के बावजूद कामयाबी का शिखर छुआ है। पहले एकेटीयू में पूरे प्रदेश में अपनी मेधा का लोहा मनवाया और अब भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) एआईईए-पीजी 2018 में उसने पूरे देश में अपनी पहचान बनाई है। उसने विकलांग कोटे में आल इंडिया आठवीं और ओबीसी में आल इंडिया 326 रैंक हासिल की है। सेल्फ स्टडी के दम पर उसने यह कामयाबी हासिल की है। मुनेंद्र का मानना है कि अगर लक्ष्य तय हो और कुछ पाने का जुनून तो कमजोरी ताकत बन जाती है।

नवाबगंज के सुंदरी गांव के रहने वाले मुनेंद्र पाल के पिता विद्या राम किसान है। चार भाइयों में वह सबसे छोटे है। बड़े भाई रमेश चंद्र घर पर रहते हैं तो दो भाई प्राइवेट सेक्टर में जॉब करते हैं। मुनेंद्र पाल ने प्राथमिक शिक्षा गांव में ही पूरी करने के बाद नवाबगंज के श्रीकृष्णा इंटर कॉलेज से हाईस्कूल किया। उसके बाद ड्रमंड राजकीय इंटर कॉलेज पीलीभीत से इंटर की पढ़ाई की। मुनेंद्र का सपना था इंजीनियरिंग का प्रोफेसर बनना। इंटरमीडिएट के साथ ही उसने 2015 में एकेटीयू की इंजीनियरिंग प्रवेश परीक्षा में हिस्सा लिया। कैटेगरी में प्रदेश में पहली रैंक हासिल की। सीसीएस यूनिवर्सिटी मेरठ उसने 2016 में बीटेक किया है। उसके बाद उसने मेरठ से ही बीटीसी किया। मुनेंद्र कहते हैं उनका सपना प्रोफेसर बनने का है इसलिए एमटेक करने के लिए आइसीएआर ए.आई.ई.ई.ए. पीजी 2018 के एंट्रेंस में शामिल हुआ। दिव्यांग होने के सवाल पर मुनेंद्र कहते हैं कि बचपन में थोड़ा एहसास होता था, लेकिन कभी इसे हावी नहीं होने दिया। स्कूल टाइम से ही उन्होंने सेल्फ स्टडी पर फोकस किया। आज सेल्फ स्टडी के दम पर ही इस मुकाम तक पहुंचे है। आइसीएआर ए.आई.ई.ई.ए. में उन्होंने कैटेगरी आठवीं रैंक हासिल की है। मुनेंद्र कहते हैं वह प्रतिदिन सात से आठ घंटे पढ़ते थे। हमेशा एक टारगेट बनाकर पढ़ा और हमेशा उसका फायदा मिला। उनका कहना है कि उनको देखकर उनके जैसे जो भी दिव्यांग छात्र होंगे उनको आगे बढ़ने का हौसला मिलेगा।

लोकसभा में शत् प्रतिशत मतदान का संकल्प पूरा करने को ये होगी व्यवस्था

अगले साल लोकसभा चुनाव में शत् प्रतिशत मतदान का संकल्प पूरा कराने को प्रशासन दिव्यांगों और चलने में असमर्थ वोटरों को बूथ तक पहुंचाने के लिए मुफ्त ऑटो-ई-रिक्शा की सुविधा देगा। इनके संचालन की जिम्मेदारी व निगरानी के लिए केंद्रों पर विशेष तौर से मतदाता साक्षरता क्लब (वीएलसी) के दो-दो स्वयंसेवी छात्र-छात्राओं की टीम रहेगी। जिला प्रशासन इस सुविधा के लिए तीन हजार से अधिक ऑटो रिक्शा व ई-रिक्शा जुटाएगा। यह जानकारी जिला निर्वाचन अधिकारी व डीएम कौशल राज शर्मा ने दी।

उन्होंने बताया कि मतदाता सूचियों में दर्ज दिव्यांग श्रेणी के वोटरों को चिह्नित कर उनका घर जाकर सत्यापन कराया जा रहा है। इसके आधार पर विधानसभा वार और फिर मतदान केंद्र अनुसार सूची बनाई जाएगी।

इसके आधार पर मतदान के दिन दिव्यांग वोटर वाले केंद्रों पर एक आटो और ई-रिक्शा की व्यवस्था होगी। दिव्यांगों को मुफ्त में इन वाहनों से घर से पोलिंग सेंटर लाने और मतदान बाद पुन: घर तक पहुंचाने का इंतजाम वीएलसी के स्वयंसेवी कार्यकर्ता करेंगे।

मनोदिव्यांग बच्चों की दुबई में प्रथम विदेश यात्रा - एक विश्व रिकॉर्ड

सितम्बर में नवजीवन चेरिटेबल ट्रस्ट संचालित डॉ हरिकृष्ण डाह्याभाई स्वामी स्कूल फॉर मेंटली चेलेंज,मेमनगर गाँव, अहमदाबाद के २६ बच्चें, उनके शिक्षकों-ट्रस्टी-अभिभावक सह दुबई-विदेश यात्रा पर गए थे। उनमें ८ बच्चें यात्रा में अकेले आए थे। पहले दिन विमान से दुबई पहुंचे। दूसरे दिन दुनिया की सब से ऊँची ईमारत बुर्ज खलीफा के १२५वें लेवल पर पहुंचे थे।

सब से ऊँची ईमारत की मुलाकात यादगार रही थी। वहां से दुबई मोल, डान्सिंग फ़वारे, अंडरवोटर चिड़ियाघर, अंडरवोटर टनल, अंडरवोटर मछलीघर की भी मुलाकात की। उसके बाद बच्चों ने क्रूज़ में बैठ कर डिनर के साथ डांस एन्जॉय किया। तीसरे दिन दुबई सिटी की टूर की जिसमें मरीना दरिया किनारें हेरिटेज शोरूम, ऊँची इमारतें, अंडरवोटर टनल और रॉयल फेमिली बंग्लोज़ देख कर डेज़र्ट सफारी मतलब रण की सैर की जहाँ छोटी गाडी में बच्चों को बिठा कर रेत की छोटी-मोटी टेकरी की सैर करवाई। रण स्थित केम्प में डिनर के साथ तनुरा और बेले डांस का मज़ा लिया

(आगे)

ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट

जिस में बच्चे भी साथ जुड़े। चौथे दिन अबूधाबी सिटी टूर की सैर की जिसमें वहां की प्रख्यात मस्जिद की मुलाकात की। वहां की ऊँची ईमारतें, पूल के साथ फ़ेरारी वर्ल्ड और यस आइसलेंड की भी सैर की।

वहां से वापिस दुबई के गोल्डसुख बाज़ार की मुलाकात की जिसमें ५८ किलो की अंगूठी-शूज़,लेडीज़ स्कर्ट जैसी चीजें बच्चों ने देखी। पांचवे दिन दुबई की प्रख्यात मीनाबाज़ार की मुलाकात करने बच्चें पहुंचे वहां से बच्चों ने चोकलेट, खजूर,घड़ी,पर्स,स्प्रे जैसी चीजों की ख़रीदी की और रात को अहमदाबाद वापिस आ गए।

डांस, ऊँची ईमारतें, धाव क्रूज़, डेज़र्ट सफारी,बुर्ज ख़लीफा, मरीना बिच, मस्क मस्जिद, अंडरवोटर चिड़ियाघर, अंडरवोटर टनल, अंडरवोटर मछलीघर, गोल्डसुख और मीनाबाज़ार इस टूर की यादगार मुलाकातें रही जिस में बच्चों को बड़ा मज़ा आया। अहमदाबाद वापिस आकर टूर की फोटोग्राफी, विडिओग्राफी और लोगबुक की माहिती वर्ल्ड रिकॉर्ड इंडिया,इंडिया बुक ऑफ़ रिकोर्ड्स,एशिया पेसिफ़िक बुक ऑफ़ रिकोर्ड्स और लिम्का बुक में भेज दी गई। ईन चार रिकॉर्डबुक द्वारा इस विदेश यात्रा की माहिती वर्ल्ड रिकॉर्ड के लिए भेजी गई है, उसकी जानकारी प्रति मेल द्वारा मिल गई। थोड़े समय में ही वर्ल्ड रिकॉर्ड के सर्टिफिकेट से संस्थान को सम्मानित किया जायेगा।